Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

महादेवी के काव्य में वेदना की अनुभूति और रहस्यवाद

श्रवण सरोज
शोधार्थी (पी-एच.डी.)
हिन्दी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली, भारत।

Article Info
Volume 4, Issue 6
Page Number : 150-157

Publication Issue :
November-December-2021

Article History
Received : 15 Nov 2021
Published : 30 Nov 2021

शोध सार :- छायावाद में जहां एक ओर रहस्यवाद दिखाई देता है वहीं दूसरी ओर विरह की अनुभूति भी दिखाई देती है । विरह कई स्तरों पर दिखाई देता है । दरअसल परिवार, समाज अथवा जहां भी प्रेम, करुणा होता है वहाँ विरह भी विद्यमान होता है । छायावाद की एक मात्र प्रतिनिधि महिला कवयित्रि महादेवी वर्मा के काव्य में विरहानुभूति सर्वोत्तम सफल अभिव्यक्ति है, उन्होंने अपने काव्यगीतों के माध्यम से क्षणभंगुर तथा नाशवान मानव हृदय की अमर पीड़ा को अपनी वाणी के द्वारा अमरत्व प्रदान करने का सफलतम प्रयास किया है । विरह महादेवी की चिरसंगिनी है, जो जीवन के प्रत्येक क्षण उनको आच्छादित किये रहती है, बुद्धत्व के प्रति अनुराग और सामाजिक करुणा का महादेवी के हृदय पर साम्राज्य था, जिसके प्रभाव के कारण महादेवी के हृदय पर वेदना के असीम गहरे रंग परिलक्षित होते है । आपके काव्य में लौकिक और पारलौकिक वेदना की प्रमुखता रही है, महादेवी वर्मा आत्मिक सुख के प्रमुख आधार असीम वेदना को ही मानती है ।

मुख्य शब्द :- आत्माभिव्यक्ति, आध्यात्मिकता, विरहानुभूति, रहस्यवाद, वेदनानुभूति, अभिव्यंजना ।

महादेवी वर्मा के काव्य में लौकिक विरह का स्वर आत्माभिव्यक्ति के रूप में व्यक्त हुआ है परन्तु उसे कवयित्री ने अलौकिक के प्रति समर्पित कर आध्यात्मिक बना दिया है। प्राय: यही स्थिति सभी छायावादी कवियों में मिलती है इसलिए जहाँ रहस्योन्मुखता सभी की एक प्रवृत्ति है, वहीं 'महादेवीवर्मा' के काव्य में विरहानुभूति के साथ-साथ रहस्यानुभूति का भी पूर्ण एवं भावप्रवण की उत्पत्ति हुई है । आलोचक सुधांशु ने इनकी भावनाओं के संदर्भ में लिखा है- "महादेवी वर्मा ने अपनी सारी मनोभावनाओं को एक अप्राप्त आराध्य के उपलक्ष्य से अभिव्यक्त करने की चेष्टा की है।''[i] छायावाद युग में महादेवी वर्मा की वेदनानुभूति अपना विशिष्ट स्थान रखती है, ये वेदनाप्रधान कवयित्री हैं। रामचंद्र शुक्ल के अनुसार- "छायावादी कहे जाने वाले कवियों में महादेवी जी ही रहस्यवाद के भीतर रही हैं। उस अज्ञात प्रियतम के लिए वेदना ही इनके हृदय का भाव केंद्र है, जिससे अनेक प्रकार की भावनाएँ छूट-छूट कर झलक मारती रहती हैं। वेदना से इन्होंने अपना स्वाभाविक प्रेम व्यक्त किया है, उसी के साथ वो रहना चाहती है। उसके आगे मिलनसुख को भी वे कुछ नहीं गिनतीं।"[ii]

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

शून्य मेरा जन्म था
अवसान है मुझको सबेरा;
प्राण आकुल के लिए
संगी मिला केवल अँधेरा;
मिलन का मत नाम ले मैं विरह में चिर हूँ![iii]

महादेवी की कविताओं में व्यष्टि में समष्टि और स्थूल में सूक्ष्म चेतना के आभास की अनुभूति अभिव्यक्ति हुई है, इनमें करुणा, संवेदना और दुख की अधिकता है। "महादेवी ने रहस्यवाद को लौकिक अनुभूतिओं के कृत्रिम आवरण को नहीं अपनाया, अपितु वह उनके जीवन की सच्ची अनुभूतिओं पर आधारित है।"[iv] महादेवी ने इस संवेदना की जगह स्वयंवेदना को शब्दों में पिरोया, मतलब अपने मन के भाव को खुद आकार दिया, महादेवी जी खासियत यह है कि उन्होंने ने अपना परिचय चंद शब्दों में कविता के माध्यम से दे दिया।

"मैं नीर भरी दुख की बदली!
परिचय इतना इतिहास यही
उमडी कल थी, मिट आज चली।"[v]

महादेवीकी काव्यागत प्रणयानुभूति आध्यात्मिक रही है। उनकी कल्पित प्रणयानुभूति में उच्चकोटि की आध्यात्मिकता है। अलौकिकता की उपासना में उन्होंने भाव प्रवणता को प्रमुखता दी है तथा उपासना के लिए सूक्ष्म तत्वों को ही प्रस्तुत किया है। वस्तुत: महादेवी के आध्यात्मिक चेतना के अंतर्गत मुख्य उद्देश्य आत्मा का परमात्मा से परममिलन है, परन्तु रहस्यात्मकता के आवरण में इस अद्भुत मिलन की परिणति लौकिक प्रेम-शब्दावली और प्रेम प्रसंगों के रूप में हो जाती है। आत्मा के मिलन की स्थिति लोभ ग्राह्य नहीं है केवल मिलनोत्कंठा ही गोचर है। इसी उत्कंठा के कारण प्रेम विरहाग्नि जागृत होता है। महादेवी के काव्य में विरह की यही जागृति मूल स्वर में परिलक्षित हुई है, जिसके कारण परमात्मा सूक्ष्म है और विरह का स्वर तीव्रतर होता जाता है, इसलिए महादेवी के विरह के आयाम प्रकृति से संबद्ध हो जाते है, प्रकृति की इस रहस्यात्मक चेतना में प्रमुख भूमिका का निर्वहन करती है, प्रियतम से मिलन की समस्त उत्कंठा लौकिक आधार पर व्यक्त होकर भी स्थूल नहीं हो पाती।

नयन में जिसके जलद वह तृषित चातक हूँ,
शलभ जिसके प्राण में वह निठुर दीपक हूँ,
फूल को उर में छिपाए विकल बुलबुल हूँ,
एक होकर दूर तन से छाँह वह चल हूँ,
दूर तुमसे हूँ अखंड सुहागिनी भी हूँ!
बीन भी हूँ मैं[vi]

महादेवी के काव्य में वेदना की अनुभूति उनके भौतिक दुखों का नहीं बल्कि उनकी आध्यात्मिक सौन्दर्य का सशक्त प्रमाण है, उनकी इस वेदनानुभूति आत्मिक सौंदर्य में कल्पना प्रवणता, बौद्ध धर्म की महाकरुणा एवं दु:खवाद के प्रति भक्तिमय अनुराग तथा मानव सेवा का अनन्य नि:स्वार्थ भावआदि प्रमुख प्रेरणा स्रोत है । "वेदना को लेकर इन्होंने हृदय की ऐसी-ऐसी अनुभूतियाँ सामने रखी हैं जो लोकोत्तर है। कहाँ तक वे वास्तविक अनुभूतियाँ हैं और कहाँ तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना है, यह नहीं कहा जा सकता।"[vii] महादेवी की काव्य में एक ओर अनंत सौंदर्य सुषमा तो दूसरे पक्ष अनंत वेदना के तीव्र स्वर अपने मार्मिक स्वरूप में व्यक्त हुआ है :-

यह दोनों दो ओरें थीं
संसृति की चित्रपटी की;
उस बिन मेरा दुख सुना,
मुझ बिन वह सुषमा फीकी।[viii]

महादेवी वर्मा का छायावाद के अन्य कवियों की अपेक्षा विशिष्ट स्थान था, इस विशिष्टता के दो प्रमुख कारण थे– एक कोमल हृदय की नारी होना तथा दूसरा अंग्रेजी और बंगला के रोमांटिक और रहस्यवादी काव्य से पूर्णत: प्रभावित होना। एक तरह महादेवी अपने आध्यात्मिक प्रियतम को पुरुष मानकर अपनी प्रणयानुभूतियों को निवेदित करती है, तो दूसरी तरफ भारतीय साहित्य और दर्शन तथा भक्तिकालीन रहस्यवादी संत काव्य परम्परा से तथा अपने पूर्ववर्ती छायावादी कवियों के काव्य के फलस्वरूप महादेवी की काव्याभिव्यंजना और बौद्धिक चेतना पूर्णत: भारतीय परम्परा के अनुरूप बनी रही। महादेवी वर्मा ने अपने काव्य में कृष्णकाव्य विरह–भावना गोपियों का सहारा लेकर नहीं किया बल्कि प्रत्यक्षत: व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभूति अभिव्यक्ति किया है, उन्हें प्रेम व्यक्त करने के लिए सूफी परम्परा आवश्यकता नहीं पड़ी, इन्हें 'वेदना की कवयित्री' एवं 'आधुनिक युग की मीरा' के नाम से भी पुकारा जाता है। इनके काव्य में अलौकिक विरह की प्रधानता तथा प्रेम वेदना सर्वत्र विद्यमान है। वेदना उन्हें इतना प्रिय है कि वह उसका साथ नहीं छोड़ना चाहती है क्योंकि उसी के माध्यम से वो सर्वशक्तिमान ईश्वर का दर्शन कर पाती है:–

मेरे बिखरे प्राणों में
सारी करुणा ढुलका दो,
मेरी छोटी सीमा में
अपना अस्तित्व मिटा दो!
पर शेष नहीं होगी यह
मेरे प्राणों की क्रीड़ा,
तुमको पीड़ा में ढूँढा
तुम में ढूँढूँगी पीड़ा![ix]

महादेवी के मूल वेदना का कारण है– चिर–वियोग। जिसने लौकिक होने पर भी आध्यात्मिक रूप धारण किया। वो मूलत: रहस्यवादी कवयित्री है, परंतु उनका रहस्यवाद मीराबाई के तरह साधनात्मक न होकर भावात्मक है, जिसके अंतर्गत उन्होंने भाव की मधुरता पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया था। उनका काव्य मानव जीवन की व्यावहारिक विषमताओं में से ही तीव्र करुणा का सृजन होता है, उनकी करुणा में निष्क्रियता या नकारात्मकता नहीं वरन रचनात्मक करुणा का वर्तमान भाव सर्वत्र परिलक्षित होता है। "इस दृष्टि से महादेवी के काव्य में निराशा का नकारात्मक रूप नहीं, करुणा का सकारात्मक पक्ष है। उसमें जीवन का उत्साह और उल्लास है।"[x] महादेवी कहती है:–

तरी को ले जावो मँझधार
डूब कर हो जाओगे पार;
विसर्जन ही है कर्णधार:
वहीं पहुंचा देगा उस पार![xi]

महादेवी ने अपने गीतों में भावना के संवेदनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण तथा उनके सुख–दु:खमय विशेषत: संस्पर्शों का चित्रण किया है। वेदना का यह स्पर्श महादेवी के भावना जगत में अधिक गहरी तीव्र, मर्मस्पर्शी होकर मिलती है। वो

मानती है कि सुख तो क्षणिक हैं वेदना ही चिर स्थायी है। उनके गीतों में इस वेदना के पीछे एक प्रमुख कारण यह है कि वह नारी है और उन्हें अपनी सारी मर्यादाओं को न लांघ सकने की अपनी अभिव्यक्ति के प्रति इतनी नैतिक शुद्धता एवं आत्मिक दीप्ति है। इसके साथ ही उनकी वाणी में सूक्ष्म बौद्धिकता से मिश्रित तरल करुण और समर्पण की भावना है।

महादेवी के काव्य में व्याप्त दुख या वेदना उस समय की स्त्रियों के दु:खों का दस्तावेज है। जो उस समय में स्त्रियों की स्थिति को अपने गीतों के माध्यम से व्यक्त करती है। महादेवी की प्रकृति वियोगिनी है और वह कवयित्री के भावजगत में पूर्ण रूप से व्याप्त है। उन्होंने अपने करुण विचारों के मंच पर अपने जीवन के मुरझाए हुए फूलों को सजाया है। वेदना और पीड़ा मानव जीवन को सर्वाधिक संवेदनशील दृष्टि विकासित करने में सहायक होते है, सामान्य दु:ख में नहीं। महादेवी की दृष्टि में वेदना, पीड़ा और क्रंदन के मध्य एक अलौकिक संबंध होता है, जो परमप्रिय की प्राप्ति में आवश्यक और महत्वपूर्ण अंग है। यद्यपि महादेवी मनुष्य के तीव्रतम दु:ख को जीवन के वास्तविक प्रगति में अति आवश्यक एवं सहायक मानती है :-

'सबके सपनों में सत्य पला !
जिसने उसको ज्वाला सौंपी
उसने इसमें मकरन्द भरा
आलोक लुटाता वह घुल-घुल
देता झर यह सौरभ बिखरा!
दोनों संगी, पथ एक,
किन्तु कब दीप खिला कब फूल जला?'[xii]

महादेवी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य जगत को अनंत काल से पीड़ित स्त्रियों के मनोभावों को मार्मिकता पूर्ण ढंग से परिभाषित किया, नारी-जागरण की शक्ति सशक्त रूप महादेवी की द्वारा पहली बार बाह्य जगत को परिचय कराया गया। "उनके रचना-कर्म में आँसू-वेदना-पीड़ा का अर्थ पराजय या पलायन से नहीं है; वह नारी के दुखते-कसकते कष्टों की, नारी अवचेतन की स्पष्ट अभिव्यक्ति है जिसमें पुरुष-बर्बरता का इतिहास लिखा हुआ है।"[xiii] अभिव्यंजना महादेवी के सम्पूर्ण काव्य का केन्द्र बिन्दु हैं। वेदना और करूणा के सहारे इसकी आत्माभिव्यक्ति ने इनके एकान्त को और भी तपोवन बना दिया है। इस दृष्टि से इन गीतों में उनके सुख-दुखात्मक जीवन का मर्म कथा का व्यापक प्रसाद दिखायी देता है-

"जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करूणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग
गाता प्राणों का तार- तार
अनुराग भरा उन्माद राग" [xiv]

महादेवी आत्मा को चराचर जगत को आवृत करने वाला विस्तार देकर अपनी प्रणयानुभूति को ऊर्जान्वित स्वरूप प्रदान किया है। उनका सुख-दु:ख, जड़-चेतन के सुख-दु:ख बनकर सम्पूर्ण प्रकृति पर परिलक्षित होने लगते है, सूफी काव्य परंपरा में जायसी ने सम्पूर्ण जगत की सहानुभूति मात्र विरह को प्रदान किया था, वहीं महादेवी छायावाद में विरह और मिलन दोनों को देती है। महादेवी अपनी आत्मा को परमात्मा से वियुक्त होने पर सागर का हृदय उमड़ना एवं पर्वत का आंसुओं से गीले गालों का चित्रण विरह के चरम बिन्दु का वर्णन किया है। इतना ही नहीं वसुंधरा के दुखों की अनन्त

शृंखला भी धूलि के कसक–व्यापारों के रूप में जो अनंतकाल से यात्रा पर है, जो न क्षणिक विश्राम पा सकी और न ही पूर्ण विराम।

प्राण हँस कर ले चला जब
चिर व्यथा का भार!
उभर आये सिन्धु उर में
वीचियों के लेख,
गिरि कपोलों पर न सूखी
आँसुओं की रेख।
धूलि का नभ से न रुक पाया कसक–व्यापार![xv]

महादेवी का सम्पूर्ण काव्य वेदनामय है, उनकी वेदना लौकिक वेदना से अलग आध्यात्मिक संसार की है, जो उसी के लिए सहज अनुभव हो सकती है, जिसने उस अनुभूति क्षेत्र में प्रवेश किया हो।महादेवी इस वेदना को उस दु:ख की भी संज्ञा देती हैं।"जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँधें रखने की क्षमता रखता है।"[xvi] सम्पूर्ण संसार को एक सूत्र में पिरोने वाला दु:ख सामान्य रूप से लौकिक दु:ख ही होता है, जो काव्य–शास्त्रीय परम्परा में करुण रस का स्थायी भाव है।महादेवी कहती है:– "मुझे दु:ख के दोनों ही रूप प्रिय है, एक वह, जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार से एक अविच्छन्न बंधनों में बांध देता है और दूसरा वह, जो काल की सीमा के बंधन में पड़ें हुए असीम चेतन का क्रंदन है।"[xvii]

महादेवी विरह वेदना कुशल चितेरी है, उनका सम्पूर्ण काव्य वेदना के मानों हिलोरें ले रहा है, उनकी वेदना चिरस्थायी है जो संसार के सर्वोत्तम सुखों से भी अत्यधिक आनंदमयी है। इसकी विरहानुभूति सागर से भी अधिक गहरी एवं विशाल तथा अनंत नभ के समान विस्तृत है, उनकी इस विरहानुभूति के संबंध में छायावाद के एक स्तम्भ सुमित्रानंदन पंत ने वर्णित किया है– "उनके काव्य का सर्वप्रमुख तत्व वेदना,वेदना का आनंद, वेदना का सौन्दर्य, वेदना के लिए ही आत्मसमर्पण हैं। वे तो वेदना के साम्राज्य की एकछत्र सम्राज्ञी है और कोई सुख उन्हें आत्म विस्मृत या आत्म आत्म–तन्मय होने को नहीं चाहिए। सुख तो क्षणजीवी है, वेदना चिरस्थायी है, चिरस्थायी एवं चिरस्पृहणीय है ।"

मैं नीर भरी दुख की बदली!
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना, इतिहास यही–
उमड़ी कल थी, मिट आज चली![xviii]

वेदना महादेवी को अत्यंत प्रिय है, क्योंकि वेदना की आग में जलकर मानव हृदय से निष्ठुरता एवं अभिमान का पूर्णत: समापन हो जाता है। इसलिए महादेवी जीवन को दीपक के समान मधुर–मधुर जलने की बात कर रही है:–

मधुर–मधुर मेरे दीपक जल।
युग–युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिफल
प्रियतम का पथ आलोकित क।[xix]

विरह की तीव्र अनुभूति की वजह से महादेवी के हृदय में अत्यधिक करुणा परिलक्षित होती है, उस समय का निराशावाद करुणा की उत्पत्ति में सहायक रहा । महादेवी के कारुणिक भाव भी अत्यन्त पवित्र है, जिनका स्मरण मात्र से

दु:ख में भी अद्भुत निखार आ जाता है। कवयित्री उस अनंत अज्ञात प्रियतम के विरह में तड़पती हुई सर्वत्र फैले वीरान सूनेपन को एक मंदिर का प्रतीक मानकर उसमें उसकी मूर्ति का करुणा स्नात दु:ख को अपना पुजारी समझने लगती है:-

"शून्य मंदिर में बनूँगी आज मैं प्रतिमा तुम्हारी।
अर्चना हो शुल भोले दृग जल अर्ध्य हो लें
आज करुणा स्नात दु:ख ही मेरा पुजारी।।"[xx]

महादेवी के काव्य की मूल भावना अलौकिक प्रेम और रहस्यवाद है, अलौकिक प्रेम में विरह-वेदना एवं पीड़ा और शोक का प्रधानता पायी जाती है, इसी शोक या पीड़ा का महादेवी ने नया नामकरण किया 'वेदना भाव'। "प्रणय-वेदना कितनी ही गंभीर क्यों न हो किन्तु उसमें मानसिक पीड़ा के साथ-साथ मधुरता का मिश्रण सदा रहता है या दूसरे शब्दों में प्रणय-वेदना वेदना होते हुए भी उसका स्वाद माधुर्य-मिश्रित रहता है; यहाँ एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है जिसकी अनुभूति महादेवी ने भी प्राप्त की है ।"[xxi]

मेरी मधुमय पीड़ा को
कोई पर ढूँढ न पाये
गई वह अधरों की मुस्कान
मुझे मधुमय पीड़ा में बोर[xxii]

महादेवी के विरहानुभूति वेदना में पूजा और आराधना का भाव है, सम्पूर्ण काव्य में कहीं भी प्रिय के प्रति आक्रोश की झलक नहीं दिखलाई पड़ती । उनके विरह के शोकोच्छ्वास निकलते है, उनमें किसी प्रकार की शुष्कता नहीं । महादेवी विरहानुभूति को अपने जीवन में पवित्र साधना बना लिया और सम्पूर्ण जीवन को उसी अलौकिक प्रेम की साधना को समर्पित कर दिया । वह अपने आराध्य की स्मृति में स्वयं आराध्यमय हो गई ।

महादेवी वर्मा की विरहानुभूति उनके काव्य को चरम उत्कर्ष तक ले जाता है । उनके काव्य में असीम विश्व से प्रेम, सेवा तथा एकाकार के रास्ते में अवरोधक आदिम प्रवित्तियों और उससे उत्पन्न कसक, छटपटाहट और अनुभव-कोमल हृदय की तरलावस्था का सुमधुर साधनात्मक रूप है । महादेवी वर्मा उस असीम शक्ति में अपने को सम्मिलित करते हुए अपने व्यक्तिव के भाव की अपेक्षा उसके विस्तार की अद्भुत कल्पना करती है । महादेवी वर्मा अपने एकाकीपन, विरह, पीड़ा आदि सब कुछ अंगीकार किया है ।

"उनसे कैसे छोटा है,
मेरा यह भिक्षुक जीवन ?
उनमें अनंत करुणा है,
इसमें असीम सूनापन ।"[xxiii]

आध्यात्मिक वेदना के इस यात्रा में आदि से अंत तक महादेवी के काव्यकी सूक्ष्मतम एवं विस्तृतभावानुभूतिओं का विकास और व्यापक फैलाव दिखाई पड़ता है। प्रथम काव्य-संग्रह'निहार' में कौतूहल से परिपूर्ण वेदना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति हुई है, जिसमें सत्य को पूर्णत: स्थान पर मोहक सौन्दर्य का वर्णन है,जबकि 'रश्मि' में अनुभूति की अपेक्षादार्शनिक चिंतन की व्याख्या का विस्तृत फ़लक दिखाई पड़ता है, यह महादेवी के युवावस्था की रचना है जिसमें प्रिय के मिलन का मधुर एहसास जागृत करती है ।'नीरजा'तक आते-आते महादेवी में सुख-दु:ख सामंजस्यपूर्ण अवस्था और वेदना का मधुर रस और उसकी समरसता का आधार बन जाता है। नीरजा महादेवी की प्रौढ़तम कृति है,'सांध्यगीत' में विरह प्रेम की भावना अधिक पवित्र बनकर साधिका को प्रिय के इतना निकट पहुँचा देती है कि अपने और प्रिय के

बीच दूरी को मिलन समझ लेती है। इसमें जीवन के अंतिम क्षणों की करुणा और वैराग्य भाव के साथ आत्मा को आध्यात्मिक निवास की ओर लौटने का प्रवृत्ति दिखाई पड़ी है। दीपशिखा' महादेवी के साहित्यिक परिपाक अवस्था की कृति है, जिसमें कवयित्री की आत्मा अकंपित और अचंचल होकर अपने आराध्य प्रियतम की अखंड ज्योति में स्वत: विलीन हो जाती है।

निष्कर्ष : महादेवी वर्मा ने अपने काव्य में उदात्य-आलंबन के प्रति आत्म-निवेदित होने के कारण अपने अंदर की ऐंद्रिकता का दहन करने वाले सर्वोत्तम सौन्दर्य का उद्घाटन किया है। वासनाजन्य ऐंद्रिक विलास का संकेत न देकर उन्होंने मिलन के प्रसंगों में ही सूक्ष्म भावात्मक समर्पण का संकेत दिया है। विरह उनके जीवन का संगीत है और वे वेदना के निरंतर जलाने वाली अग्नि में तपकर कुन्दन की भांति अपनी आत्म को पवित्र करती दिखाई पड़ती हैं। महादेवी का काव्य में आध्यात्मिक चिंतन की भावप्रवण अभिव्यक्ति हुई है और उनकी कविताओं में मूलत: करुणा एवं वेदना का भाव ही आध्यात्मिक रहस्यवाद को अभिव्यक्त करने में सक्षम रहा है।

संदर्भ सूची :

1. डॉ. विमलेश तेवतिया, महादेवी वर्मा : व्यक्तिव और कृतित्व, अमर प्रकाशन, मथुरा, 2008, पृ. 58
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन आठवाँ संस्करण-2012, पृ. 489
3. https://www.hindisamay.com/content/9335/1/महादेवी-वर्मा-कविताएँ-शलभ-मैं-शापमय-वर-हूँ.cspx
4. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास(भाग-2) – गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, 2015, पृ. 98
5. https://www.kavitakosh.org/kk/मैं_नीर_भरी_दुख_की_बदली!_/_महादेवी_वर्मा
6. https://www.hindwi.org/geet/biin-bhii-huun-main-tumhaarii-raaginii-bhii-huun-mahadevi-varma-geet
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, 2012, पृ. 490
8. https://www.hindi-kavita.com/HindiRashmiMahadeviVerma.php
9. https://www.kavitakosh.org/kk/उत्तर_/_महादेवी_वर्मा
10. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, 2009, पृ. 134
11. https://www.hindi-kavita.com/HindiNeeharMahadeviVerma.php
12. https://www.avitakosh.org/kk/सब_आँखों_के_आँसू_उजले,_सबके_सपनों_में_सत्य_पला!_/_महादेवी_वर्मा
13. नवजागरण और महादेवी वर्मा का रचना-कर्म स्त्री-विमर्श के स्वर – कृष्णदत्त पालीवाल किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, पृ. 29
14. https://www.aajtak.in/literature/poems/story/top-5-hindi-poems-of-great-poet-mahadevi-verma -648211-2019-03-26#:~:text=जो%20तुम%20आ%20जाते%20एक,जीवन%20के%20हर%20रंग%20 उकेरे.
15. https://www.hindi-kavita.com/HindiDeepshikhaMahadeviVerma.php
16. रश्मि (भूमिका) – महादेवी वर्मा, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग प्रथम संस्करण-1932, पृ. 7

17. वही, पृ. 29
18. https://www.kavitakosh.org/kk/मैं_नीर_भरी_दुख_की_बदली!_/_महादेवी_वर्मा
19. नीरजा – महादेवी वर्मा, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग, पृ. 59
20. https://www.avitakosh.org/kk/शून्य_मन्दिर_में_बनूँगी_/_महादेवी_वर्मा
21. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास(भाग-2) – गणपति चन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, 2015, पृ. 98-99
22. https://www.hindi-kavita.com/HindiNeeharMahadeviVerma.php
23. निहार – महादेवी वर्मा, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग, पृ. 45
24. हिन्दी साहित्य कोश (भाग – 1 व 2) – सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, जून 2013, पृ. 35
25. महादेवी का काव्य एवं बिम्ब-शिल्प – डॉ. वंदना मिश्रा, विकास प्रकाशन कानपुर संस्करण – प्रथम 2016, पृ. 55